वेद दर्पण में प्रतिविम्बित पूर्ण विश्व

शब्द शास्त्र की मान्यता सभी विभिन्न धर्म मतावलंबी करते हैं। शब्द को सभी मानते हैं और जो नहीं मानते हैं, उन्हें भी इसको मानना चाहिये। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण वायरलैस है। बिना तार का तार जो परब्रह्म तक भी पहुँच सकता है। **शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्मा धिगच्छति।** शब्द ब्रह्म में निष्णात होकर ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है। मंत्रों के अक्षर, चाहे वे किसी जातिधर्म के हों, वे मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि की क्रियाओं को संपन्न करते हैं। कर्ता के द्वारा प्रयोग करने पर ठीक लक्ष्य को वेघने के लिये बाण के समान कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं।

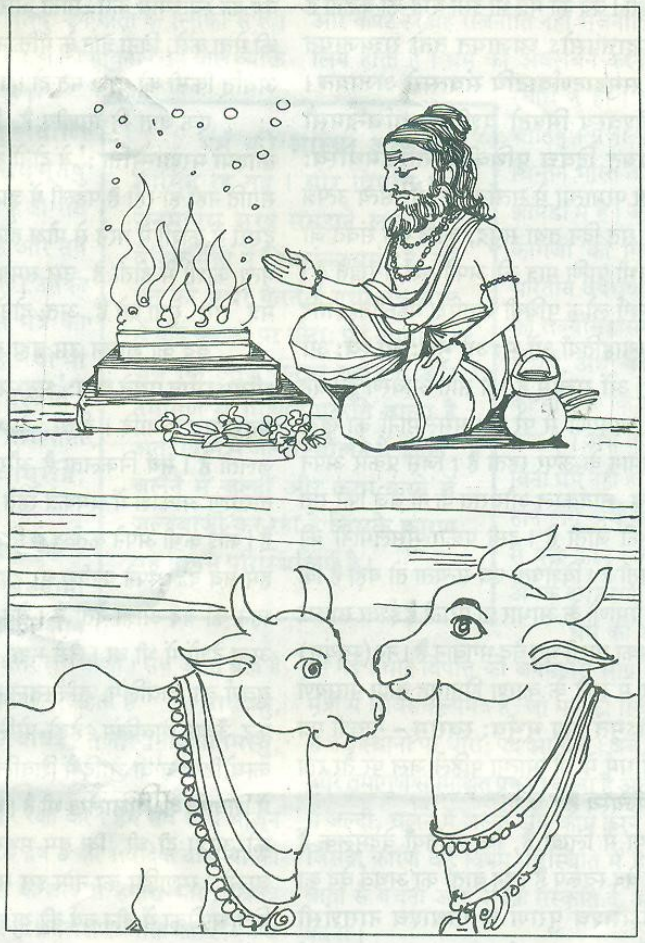

राजस एवं तामस लोग मंत्रों का दुरूपयोग भी करते हैं। ऐसा करने से शब्द शक्ति बल घट जाता है। एक बार मारणक्रिया करने के बाद मंत्र शक्ति हीन हो जाता है। कृत्या या अभिचार के प्रयोग अथर्व वेद में है। मेरे प्रमातामह श्री रघुनाथ जी जिन्हें वाला त्रिपुर सुंदरी प्रत्यक्ष दर्शन देती थी। उनका लिखा हुआ अथर्ववेद का एक मंत्र है, जो शत्रु के द्वारा किये गये कृत्या (घात) को वापिस लौटा देता है- **यां कल्पयन्ति नो रयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव। ओं ह्रां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ह्रीं ओंस्वाहा** - यह मंत्र है। सत्य एवं स्थिरता के दिये गये शाप तथा बरदान भी सफलता का कार्य करते हैं। शब्द बिना हथियार का हथियार है।

अथर्ववेद में शाप के लौटाने का एक मंत्र है - **शप्तारमेतु शपथो यः सुहार्त तेन नः सह। चक्षुर्मंत्रस्य दुर्हार्दः पृष्ठीरपिश्रृणीमसि।** शब्द तत्व निरंजन है। नित्य है। स्फोट रूप है **''इत्थं निष्कृस्यमाणं यच्छब्दतत्वं निरंजनम्। ब्रह्मैवेत्यक्षरं प्राहु स्तस्मै पूर्णात्मने नमः।** तैयाकरण भूषण में शब्दतत्व निरंजन ब्रह्म है। वही स्फोट वंदनीय कहा है। वाक्य पदीय में भी कहा है **'अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।** संसार मे जितने ज्ञान हैं, वे विना शब्द के नहीं हो सकते हैं। शक के द्वारा ज्ञान भासित होता है। वेद भी शब्द - है विद ज्ञाने धातु से सिद्ध होता है। वेद शब्द विचारार्थक लाभार्थक एवं ज्ञानार्थक है। मुस्लिमधर्म का वेद कुरान है नमाज में दोनों कानों मे ऊंगली डालकर अल्ला शब्द को पुकारा जाता है। ईसाई धर्म ग्रंथ वा इवित में लिखा है, कि पहले वचन था। वही यीशू के रूप में परिवर्तित हो गया। इन आधारों में निराकार एवं साकार वाद भी छिपा हुआ है। वेद गुरू परंपरा से प्राप्त होता था। वही साकार लिपिरूप में परिणत हुआ। वेद की लिपि ताडपत्र और भोजपत्र पर हुई। अब तो कागजों की प्रथा हो गई है। वेद ब्रह्म है। शब्द स्वरूप है। अन्य धर्मों में भी शब्द ब्रह्म मान्य है। किन्तु सत्य क्या है, सनातन क्या है।

अरवी ग्रंथ हदीश में लिखा है, कि मुस्लिमधर्म ठीक हिन्दूधर्म का उलटा धर्म है, इस कथन से पंडितराज जगन्नाथ ने बादशाह के

दरबार में हिन्दू संस्कृति को अनादि प्राचीनसिद्ध किया था। भारतीय संस्कृति का ही नहीं, किन्तु विश्वमात्र की संस्कृति का आधार मूल वेद है। **वाङ्मय: प्रणव:सर्वं तस्मात् प्रणवमभ्यसेत्।** संपूर्ण वाङ्मय प्रणव है और वह गायत्री मय है। **'ओंकारस्तु परं ब्रह्म गायत्री स्यात् तदक्षरम्'** इस याज्ञवल्क्यम कथन से ओं पर ब्रह्म है। गायत्री और ओंकार में भेद नहीं है। 'ओमिति ब्रह्म' (तैत्तिरीयोपनिषद्) ब्रह्म गायत्री इत्यादि प्रमाण है। श्रीमद् भागवत में सृष्टि की अभी में ब्रह्मा के चिन्तन करने पर ''त'' और ''प'' इन दो अक्षरों की ध्वनि हुई थी। वेद का मंत्र भी इसी बात को कहता है **'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽ ध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधव्दिश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवंच पृथिवींचान्तरिक्षमथोस्वः** महाप्रलय के बाद तपरूप परमात्मा मे सत्संकल्प और सत्य उत्पन्न हुआ। उसी परमात्मा से रात दिन तथा समुद्र, काल रूप संवत जो अपनी पलक मारने से सभी प्राणि मात्र को अपने वश में रखते हैं। इसके बाद सूर्य, चंद्र, स्वर्ग लोक पृथिवी अंतरिक्ष महर्लोक आदि हुए। गायत्री मंत्र में सात व्याहृतियाँ **ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम्** हैं। ये सात आवरण हैं। वह परमात्मा वेद पुरूष इन आवरणों से परे है। मुसलमानों का खुदा (ईश्वर) भी सातवेंआसमान के ऊपर रहता है। जिस प्रकार अपने यहाँ संध्या प्रातः मध्यान्ह, सायंकाल और रात के नौ बजे फिर रात के १२ बजे पाँच बार की जाती है। इसी प्रकार मुसलमानों की नमाज पाँच बार पढी जाती है। विशेषता एवं सत्यता तो यही है कि हिन्दू संस्कृति पूर्ववर्णित प्रमाणों के आधार पर पुरानी है ईश्वर साकार और निराकार भी है जिसका साक्षी भूत वेद भगवान् है। नर (स्वयंम्) के पुत्र नार है। उस नार में रहने के कारण पितामह ब्रह्मा नारायण है। **(आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्** - गायत्री मंत्र का शिरोभाग है। ईसाई धर्म में भी आत्मा पहिले जल पर तैर रहा था। दोनों धर्मों का सामंज्यस्य है।

मीमांसा परिभाषा में लिखा है, कि स्मृतियाँ वेदमूलक हैं और इतिहास एवं पुराण वेद स्वरूप हैं। इन बातों का अथर्व वेद का यह मंत्र भी है **तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसी श्चानुव्यचलत्। इतिहासस्य च वै स पुराणस्य गाथानां नाराशंसीनां प्रियं धाम भवति। च य एवं वेद (अथर्व वेद)।**

इतिहासपुराणं च पंचमं वेदानां वेदम् (छांदोग्योपनिषद्) इतिहास और पुराण पाँचवाँ वेद है।

वेद की शासन व्यवस्था -

वेद पुरूष तो एक ही था। बाद में श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास ने वेद को चार भागों में विभक्त किया (१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (अथर्ववेद) कृष्ण यजुर्वेद उच्छिष्ट रूप में बना।

आचार्य मम्मट ने काव्य प्रकाश में प्रभुसंमित उपदेश का वर्णन किया है। प्रभुसंमित का अर्थ राजाज्ञा है। राजा की आज्ञा में वेद की आज्ञा में ननुनच वाला तर्क नहीं चलता है। शासन मानना ही पडेगा। वैदिक वाङ्मय का उपदेश है - **सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः, मातृदेवोभव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः, मा हिंस्यात् सर्वभूतानि, अहरहः संध्यामुपासीत''** सच बोलो, धर्म का आचारण करो, वेद का स्वाध्याय करो, माता और पिता की सेवा करो, आचार्य की सेवा करो, बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती है। प्राणियों की हिंसा अर्थात् किसी को दुःख मत दो। प्रतिदिन संध्या उपासना करो।

एक बात विचारणीय है, कि **ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः तथा काश्यां मरणान्मुक्ति :'** ये दोनों श्रुतियां परस्पर विरूद्ध हैं। अर्थ संगति नहीं हो रही है पहली में ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं होती है। दूसरी में काशी में मरने से मोक्ष होती है इस संदर्भ में जब भक्त की मृत्यु काशी में होती है, उस समय विश्वनीयशिव कान में तारक मंत्र **'राम'** सुना देते हैं, अतः दोनों श्रुतियाँ संगत है।

वेद का शासन उस ब्रह्म का शासन अपरिवर्तनीय है :- **भीयाऽस्मात् पवते वातः' मद्भ्यात् वातिवातोऽ यं सूर्यस्तपति मद्भयात्** इत्यादि। ईश्वर के भय से वायु चलती है। अग्नि जलती है। सूर्य निकलता है और चंद्रमा रात्रि में प्रकाश देता है तारांगण आकाश में चमकते रहते हैं। यथा समय सब कार्य करते हैं। कोई कभी अपने कर्तव्य से विचलित नही होता है। इसी प्रकार हम सब को अपने कर्तव्य पर दृढ रहना चाहिये। कर्तव्यपरायण रहने की वेद आज्ञा देता है। वेद का साम्राज्य भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी था। जैसे मक्का में दो शिवलिंग, स्कांट लैंड में सुवर्ण का शिवलिंग, तुर्किस्तान (वाव लिन शहा) में बारह सौ फुट ऊँचा शिवलिंग, हेड्रो पोलिस, दक्षिण अमेरिका योरोप, कम्बोडिया जावा आदि में शिवलिंग उपलब्ध होते हैं। इंडोचाइना में शिवमंत्र का शिलालेख भी है। भगवान् श्रीकृष्ण ने कालियानाग को आज्ञा दी थी, कि तुम मथुरा को छोड़कर रमणद्विप चले जाओ। रमणद्विप का नाम इस समय अफ्रिका देश है। मेरे एक मित्र अफ्रीका में तीन वर्ष की यात्रा पर गये थे उन्होंने मुझे बताया था, अफ्रिका के निकट एक सरकारी झील है। जो अगाध विशाल है, उसी झील में कुछ समय पूर्व हजार फणों वाला एक साँप दिखलाई दिया था। वहाँ की सरकार ने उसको पकडवाने के लिये प्रयत्न किये, किन्तु वे विफल सिद्ध हुए। इन सब उद्धरणों से सिद्ध होता है, कि वैदिकी संस्कृति व्यापक तथा सनातन है। वेद का शासन एक तंत्र वाद है, किन्तु प्रजातंत्र वाद भी है। वेन राजा ने राज्य में जब युद्ध घोषित कर दिया **अहं इन्द्रः अहं वरूणः अहं**

कुवेर: मै इन्द्र हूँ मै वरूण हूँ और मैं ही कुबेर हूँ, यज्ञ मत करो। मैं ही यज्ञ भाग का अधिकारी हूँ। मै ईश्वर हूँ। उस समय इस अनाचार को देखकर ऋषियों ने वेन को नष्ट कर दिया था और उसके शरीर मंथन से उत्पन्न महा राज पृथु को राजा बताया था।

अर्वा संस्कृत शब्द ही अब देश बन गया। अर्वा घोडे को कहते हैं।

वेद शासन में एकता और प्रेम -

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत: ।तत्र को मोह: क शोक: एकत्वमनुपश्यत:। (शुक्लयजुर्वेद) इस मंत्र का सामंजस्य 'सम: सर्वेषु भूतेषु' इन गीता के श्लोकों से है। चेतन या अचेतन प्राणि मात्र में एकता की भावना रखने वाले व्यक्ति को शोक और मोह नहीं रहता है।

दूसरा मंत्र है - **यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचित्सति।** जो सब प्राणियों में अपने को देखता हैं और सब प्राणियों को अपने में देखता है। उसका संदेह दूर हो जाता है। इस मंत्र का सामंजस्य गीता के श्लोक से है - **यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि न च स प्रणश्यति। भागवत में भी - खं वायुरग्नि: सलिलं महीं च।**

सरित्समुद्रांश्च हरे: शरीरं यत्किंच भूतं प्रणमेदनन्य: ।। गोस्वामी तुलसीदास जी की रचना में (सियाराम मय सब जग जानी। करऊँ प्रणाम जोरि जुग पाणी। सब जगत् ब्रह्म है फिर क्या वैरभाव। वेद की श्रुतियां - कहती हैं **''सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै, तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।**

हम सब लोग एक होकर रक्षा करें। हम सब साथ भोजन करें, हम सब पराक्रमी बने। हम द्वेष न करें। वैदिक वाङ्मया का यह उद्बोधन है। इसी एकता के बल से हमारा भारत स्वतंत्र हुआ। इन प्रमाणों के आधार पर ही प्रेमलक्षणा भक्ति का अविर्भाव हुआ। दाम्पत्य प्रेम एकता का सूचक यजुर्वेद का मंत्र है - **पिता नोऽसि पिता नो वोधि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसी: । त्वष्ट्रमन्तस्त्वा सपेम पुत्रान् पशून् मयि धेहि प्रजामस्मासु धेह्यरिष्टाह सह पत्या भूयासम्।**

हे महावीर आप पिता हैं। पिता की तरह समझाइये। अध्वर्यु पत्नी से कहते हैं। हे धर्म मैं मैथुन मे तुम्हें ग्रहण करता हूँ। मुझ को पुत्र दो। पशुओ का पालन करो। हमारे वंश की वृद्धि हो। पति के साथ पत्नी आनंद से रहे और हमेशा पति के साथ पत्नी चिरंजीवी रहे। इन मंत्रों से तलाक का विधान नहीं है। भारतीय नारी तो आद्या शक्ति है।

शिवशक्ति की एकता तो (षोडशी तु कला ज्ञेया सच्चिदानंदरूपिणी) है। सच्चिदानंद को षोडशी कला कहते हैं। एकता का प्रेम विश्वविजय की प्राप्ति करता है। हमारी संस्कृति अन्य संस्कृतियों को मार्गदर्शन करती है। धर्मनीति और राजनीति का भी परस्पर संबन्ध है। संबन्ध कूटनीति का भिन्न है। जिसमें छल और कपट हो वह राजनीति नहीं राजनीति तो प्रजा के कल्याण के लिये होती है। धर्म का अवलंबन करने वाली राजनीति जिसमें स्वार्थ न हो। वही लक्षण ठीक मानना चाहिये। प्रजा का सुख कहाँ है। इसका चिन्तन भारत के प्रधान मंत्री चाणक्य की झोंपडी में है। जो इं गुदी के तैल दीपक से कागजों को गिन रहे हैं। वस्त्र उत्तरिय भारतीय वेषभूषा है। जिसने चंद्रगुप्त मौर्य को राज्यसिंहासन पर बिठाया था। शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पदार्थों को माना है कि आज के युग में क्रम बदल गया है। अर्थ के बाद धर्म है। अर्थ के बिना धर्म नहीं हो सकता है। अर्थ से अनर्थ होने लगे अर्थ के बल पर जनगण प्रकृति से युद्ध करने लग गया, जिसके परिणाम अनेक दुर्घटनाएँ हैं।

धर्म की आस्था अर्थ तक सीमित रह गई। घोर विपत्ति को जनमानस सुख समझने लगा है। वैदिक मंत्रों में शिवसंकल्पमंत्र है, जो मन को स्थिर करते हैं तथा मंत्र भाग में कई स्थानों पर धीरा: पद आता है। जब कि आज मनुष्य रजोगुण और तमोगुण से मिश्रित प्रकृति वाला है अत: खाने में जल्दी, बोलने में जल्दी, चलने में जल्दी और काम करने में जल्दबाजी कर रहा है जिसके कारण वह विषम परिस्थिति में है।

धर्म की आस्था अर्थ तक सीमित रह गई। घोर विपत्ति को जनमानस सुख समझने लगा है। वैदिक मंत्रों में शिवसंकल्पमंत्र है, जो मन को स्थिर करते हैं तथा मंत्र भाग में कई स्थानों पर धीरा: पद आता है। जब कि आज मनुष्य रजोगुण और तमोगुण से मिश्रित प्रकृति वाला है अत: खाने में जल्दी, बोलने में जल्दी, चलने में जल्दी और काम करने में जल्दबाजी कर रहा है जिसके कारण वह विषम परिस्थिति में है। वेद की आज्ञा है इन बातो से बचना और वैदिक संस्कृति के अनुसार धैर्य से सब काम करना।

उष्णयि (पगडी) तथा उत्तरीय वस्त्र दुपट्टा प्राचीनवेशभूषा है।

वैदिक कालीन कर्म -

यज्ञ का विधान यजुर्वेद में दिया गया है। **अथ यज्ञं व्याख्यास्याम: -** इस श्रौतसूत्र के अनुसार द्रव्यात्मक, देवतात्मक और त्यागक्रियात्मक। द्रव्यों में सोमरस पुरोडाश, घी, यवागू हविष् ओदन तंडुल फल आदि। इंद्र आदि देवता। सोमयज्ञ आदि। यज्ञ सकाम और निस्काम भी होते हैं। **कारीरीयज्ञ कारीर्यवृष्टि कामो**

यजेत्' वर्षा के लिये होता है। **''अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्ग कामः''** स्वर्ग की कामना के लिये अग्नि होत्र करना चाहिये। अभिज्ञान शाकुंतल में कण्व ऋषि के आश्रम का वर्णन है। आश्रम में ऋषि होम करते। कर्म की प्रधानता है यज्ञ भी कर्म है।

गुरू शिष्यपरंपरा -

वैदिक काल में नगर से दूर आश्रम होते थे। ऋषिगण रहते थे। उनका प्रवंध राजा लोग करते थे। आश्रमों में प्रातः काल और सायंकाल हवन किया जाता था। गायों को भी पालते थे। आश्रम में मृग भी रहते थे। शिष्य प्रातः वेदध्वनि करते थे। वे गुरू जनों की सेवा करते थे आश्रमों की पुष्पवाटिकाओं को जल से सिंचन करते थे। राजा रघु के काल में एक वरतंतु आम के आचार्य थे। कौत्स उनका शिष्य था। अनेक शिष्य विद्या पढते थे। विद्यार्थियों से फीस नहीं ली जाती थी। किन्तु गुरूजन उनका भोजन वस्त्र आदि का भी प्रबन्ध करते थे। विद्यार्थी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते थे। जब कौत्स गुरूवरतंतु से पूर्ण विद्या प्राप्त कर चुका, उसने गुरू दक्षिणा देने की प्रार्थना की। आचार्य ने कहा वत्स ! जो तू ने सेवा की है, वही गुरू दक्षिणा है। इस पर न मानने पर गुरूजी ने कहा, कि अच्छा मैंने तुझे १४ विद्यायें पढ़ाई है। मुझे १४ करोड स्वर्ण मुद्रा दे। उसी समय कौत्स रघु के पास गया। रघु अश्वमेघ यज्ञ में सबकुछ दे चुके थे। उनके पास मिट्टी के पात्र थे। कौत्स ने रघु के पूछने पर कहा महाराजा मैं गुरूजी को स्वर्णमुद्रा १४ करोड देने की इच्छा से आया था। किन्तु क्या करूँ। आप स्वयं इस परिस्थिति में हैं। राजा ने कहा। ऋषि पुत्र मेरे भुजाओं में बल है। कल अल्का पुरी पर चढ़ाई करूँगा। चिन्ता मत करो। विश्राम करो। रघु के इस संकल्प को आकाशचारी यक्ष ने कुबेर से कह दिया। कुबेर की आज्ञा से यक्षों ने अयोध्या में रात में ही स्वर्णवृष्टी कर दी। कौत्स ने १४ करोड मुद्राए गिन ली बाकी छोड दी। राजा ने कहा ऋषि राज यह धन मेरा नहीं सभी मुद्राएँ ले जाओ। कौत्स ने अस्वीकार किया। कालिदासजी लिखते हैं, कि प्रशंसनीय कौन है - देय दक्षिणा से अधिक न लेने वाला कौत्स अथवा संकल्पित आया हुआ सारे धन को देने वाला राजा रघु। यह आदर्श है। आज के गुरु एवं शिष्य में कितना अन्तर है ?

प्राचीन भोजन वस्त्र आदि -

प्राचीन काल में पेडों का बाहुल्य था उनकी लकडियों से घर का काम होता था। उन्ही समिधाओं से होम होता था। यज्ञ के धूएँ से वायुमण्डल पवित्र होता है। यज्ञ शालाएँ होती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य त्रिकाल संध्या गायत्री जप करते थे। धर्म का शासन था। गायें पाली जाती थी। ऊँट बकरी आदि भी हाथी, घोडे, बैल पाले जाते थे। वेद के यज्ञ प्रकरण में गाय के दूध का उल्लेख भी मिलता है। कागज के स्थान पर लिखने के कार्य में भोजपत्र और ताडपत्र थे। बनवासी भोजपत्र के वस्त्र पहिनते थे। इसकी मंत्र में वृक्ष आदि की प्रशंसा है - **मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमाँ ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः** पीपल आदि पेड, सूर्य, गायें तथा वायु इत्यादि हमें रस प्रदान करें। मधु रस को कहते हैं। ऋषियों का भोज्य सवाँ चावल जौ कंद मूल फल आदि के अथर्ववेद का मंत्र है **- शिवौ ते स्तां ब्रीहियवावबलासावदोमधौ। एतौ यक्ष्मं विबाधेते एतौ मुंचतो अंहस :''** (२/२/१८) जौ और चावल तुम्हारे पुष्टिदायक हो। ये दोनों अन्न यक्ष्मा रोग के नाशक हैं। और देवान्न होने के कारण पाप नाशक भी है। इसीलिये हवन में जौ और चावल का प्रयोग किया जाता है जिससे वायु मंडल के दुष्ट कीटाणु नष्ट होते हैं। **यज्ञोपवीत संस्कार मे यज्ञोपवीत धारण करने से**

तेज बढ़ता है तथा लघुशंका के समय जनेऊ कान पर चढाने से मधुमेह रोग का निवारण होता है। कान के पास अलंवुषा नाक की नाडी दब जाती है इसी प्रकार मेरवला (कोंदती) कटि में धारण करने से धुरी पेट की नही डिगती है। कर्ण वेध संस्कार से कान के छेदन से काम की शक्ति नष्ट होती है। सोलह संस्कार जिन का विधान है वेद द्वारा प्रति पादित है सभी रहस्य पूर्ण है।

राजदण्ड एवं राजनीति - राजा को मंत्री मंत्रियों के साथ दण्ड व्यवस्था के लिये अपने पुरोहित को जो अथर्व वेद का ज्ञाता हो उसको नियुक्त करना चाहिये, ऐसा याज्ञवलक्य का मत है। शत्रु के बलाबल की परीक्षा के लिये गुप्तचरों को नियुक्त करना चाहिये। राजा को संध्या जप तथा वेद पाठ करना चाहिये फिर गाना बजाना देखना और गुप्तचरों का संदेश सुनना चाहिये। ब्राह्मणों पर क्षमा शत्रुओं पर क्रोध करना चाहिये। **अरक्ष्यमाणा कुर्वन्ति यत्किंचित् किल्विषं प्रजा तस्मात्तु नृपतेरर्ध यस्माद् गृहजात्यसौ** प्रजा जो पाप करती है, उसका आधा पाप राजा को मिलता है अत: राजा छठवाँ भाग करके कर लेता है। छगुना पुण्य और छगुना पाप। प्रजा का पालन महापुण्य है। धर्मशाला की आज्ञा है - **अदण्ड्यौ माता पितरौ स्नातक परिव्राजक बानप्रस्था श्रुतशील शौचाचारवंतस्नेहि धर्माधिकारिण:।** माता पिता, संन्यासी, वानप्राथ और विद्वान् ये दण्ड के अधिकारी नहीं है। शेष अपराधी दंड के योग्य हैं। राजा को पक्षपात नहीं करना चाहिये। रिश्वत नहीं लेना चाहिये। नारद ने ब्राह्मण के दंड संबन्ध में ब्राह्मण का सब कुछ छीन कर देश से निकालना कहा है।

कन्या विक्रय पुत्र विक्रय वर विक्रय का निरुक्त आदि में निषेघ किया है ये दान नहीं है आत्म घात है। मिताक्षरा में लिखा है जो संन्यास लेकर भ्रष्ट हो जाता है उसे राजा का दास बनना चाहिये। मिताक्षरा के अनुसार किसी मोहल्ले में यदि चोरी हो जाय तो वहां की पुलिस चौकी या ग्रामपति से धन लेना चाहिये। यदि चोर धन देने मे असमर्थ हो राजा के खजाने से धन मिलना चाहिये। रात में चोरी करने वाले चोरों के हाथ कटवाकर उन्हें शूली पर चढाना राजाज्ञा है। रास्ता गीरों को थोडे अपराध में दण्ड का विधान नहीं है।

स्मृति वेद शास्त्रों में सब का समाधान वर्णन दिये हैं। रामायण मंजरी में वर्णन है-एक पेड के आवास पर उल्लू और गिद्ध का विवाद हो गया, वे राजदरबार में गये गिद्ध ने कहा-श्रीराम। मैं पेड पर वराह अवतार के समय से रहता हूँ। उल्लू बोला। महाराज ! मैं तो महाप्रलय के आरंभ से ही हूँ। राम ने कहा। पेड का आवास अधिकारी उल्लू है यह निर्णय राजनीति। राज अनीति में लाख दो लाख का निर्णय गिद्ध का हो सकता था। भारत की छाप बादशाह जहाँगीर ने बेगम को धोबी के मरने के निमित्त में फाँसी का दंड दिया था यह है भारत की राजनीति।

उपसंहार -

आत्मभावना ही देश है भावनामय वैदिक मंत्र है - ओं यो मामग्ने भागिनं संतमथा। भागं चिकीर्षति। अमागमग्ने तं कुरू। मामग्ने भागिनंकुरूस्वाहा हे अग्नि देव ! जो अपना हिस्सा चाहते हैं हमारे हिस्से का लेना चाहते हैं उनको हिस्सा मत दो। हमारा राष्ट्र तो मागृध: कस्य स्विद्धनम् किसी के धनकी इच्छा नहीं करता है। देश अखंड है। अंततोगत्वा राष्ट्र के जनमानस की सुख समृद्धि अटल रहे, यही कामना है।

राधाकृष्ण शास्त्री एम्.ए,का.सा.वे.आचार्य
गीतारत्न, कच्ची सड़क मथुरा